VIII

मालवों के सिक्के

2. Coins OF MALWAS.

बुद्ध के काल में दो प्रकार के राज्य थे – राजतंत्र और प्रजातंत्र। प्रजातांत्रिक राज्यों अथवा संघों को गण भी कहते थे, जिनका संचालन सभा और समितियों द्वारा होता था। प्राचीन भारत में गणराज्यों में मालव गणराज्य भी एक अत्यन्त प्रभावशाली एवं शक्तिशाली राज्य था। अन्य गणों के समान मालवों ने भी अपने सिक्के तैयार करवाये। इन सिक्कों की प्राप्ति स्थान, बनावट और मुद्रालेख के आधार पर इनके इतिहास की जानकारी होती है। प्रारंभ में इनका निवास उत्तर-पश्चिमी भाग में था। यूनानी राजा सिकन्दर के आक्रमण के समय मालव जाति का राज्य रावी तथा सतलज के द्वाब में विस्तृत था। क्लासीकी इतिहासकारों ने इसके लिए "मैलाई" शब्द का प्रयोग किया है। के० पी० जायसवाल के अनुसार "मालव जाति अपने धन और शक्ति के लिए प्रसिद्ध था तथा उनका एक प्रजातांत्रिक संविधान था" जनरल कौनंघम ने मुल्तान को उनकी राजधानी बताया है। इसके विपरीत जायसवाल के मतानुसार मालव जाति के नगर चेनाब के किनारे आबाद थे तथा उनकी राजधानी रावी नदी के तट पर थी।

ऐसा प्रतीत होता है कि विदेशियों के दबाव के कारण मालव जाति के लोगों को अपना मूल निवास स्थान छोड़ना पड़ा। दूसरी शदी के पूर्व में करकोट के नगर में आकर बस गए। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि वे भंटिका से पटियाला होते हुए आए होगें। ई० पू० 58 में उत्तम भद्रों से उनका युद्ध अजमेर के पश्चिम में हुआ। फलत: अजमेर के क्षेत्र में उनके कदम जम गये जहाँ वे स्वतन्त्रता पूर्वक एक प्रजातंत्र के रूप में शासन करते रहे। इस जाति के निवास करने के कारण ही "मालवा" क्षेत्र का नामकरण हुआ। ई० पू० 56 में एक सम्वत् चलाया गया जिसे मालव गण के नाम पर "मालव सम्वत्" कहते हैं। संभवत: इस सम्वत् को मालवा

से अथवा मालव जाति के नाम से सम्बोधित कर सर्वत्र प्रचलित किया गया।

रैप्सन महोदय के अनुसार मालवों की दो शाखाएँ हो गयी थी। एक तो उत्तरी पंजाब में ही रह गयी और दूसरी शाखा मध्यभारत में पहुँची। कुषाण तथा पश्चिम के क्षत्रप राजाओं के साथ उदय के कारण करीब सौ वर्ष तक मालव जाति का सूर्य अस्त हो गया। क्षत्रपों ने इनके प्रदेश को अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया था। ईसी की दूसरी शदी तक शक लोगों के अधीन होकर यह जाति अपना समय व्यतीत करती रही। किन्तु कुछ ही समय के पश्चात् क्षत्रप जीवदामन और रुद्रसिंह के बीच आपसी झगड़े से प्रोत्साहित हो मालव जाति ने विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया। इस प्रकार तीसरी शदी ई० पू० में मालव गण पुनः स्वतन्त्र हो गया।

मालव गण के शासकों की उपाधि 'मयराज' या सेनापति ही मिलती है। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि गण के अधिकारी अधिपति का चुनाव होता था। समुद्रगुप्त के प्रयाग-प्रशस्ति में अन्य गणों के साथ मालव का भी नाम आता है। ए० एस० अल्तेकर के मतानुसार अन्य गणों के समान समुद्रगुप्त मालव गण का अंत नहीं कर सका। वे किसी प्रकार मालवा में शासन करते ही रहे। पांचवीं शदी में हूणों ने मध्यभारत पर अधिकार कर मालव गण को सदा के लिए भारतीय इतिहास से मिटा दिया। स्लन के मतानुसार इनका विनाश चन्द्रगुप्त द्वितीय के हाथों हुआ।

मालव गण ने २०० ई० पू० से चौथी शती ई० तक सिक्के चलाए। इनके हजारों सिक्के अजमेर, टोंक, चित्तौरगढ़ आदि स्थानों से उपलब्ध हुए हैं। विश्व में इनसे छोटे आकार के सिक्के शायद ही उपलब्ध हुए हों। प्राचीनतम सिक्के बाद की तुलना में बड़े हैं जिनका व्यास आधा इंच

Scanned with CamScanner

के बराबर है। इनका औसत तौल साढ़े दस ग्रेन से अधिक नहीं है। सबसे छोटे सिक्के की तौल डेढ़ ग्रेन है।

मालव सिक्कों के कालक्रम के बारे में विद्वानों में अत्यधिक मतभेद है। कार्लाइल और कनिंघम ने इनका काल २५० ई० पू० से २५० ई० तक बताया है। स्मिथ और रैपसन के मतानुसार मालव सिक्कों का आरम्भ १५० ई० पू० हुआ। रैप्सन ने इसका अंतिम काल ४०० ई० तक पहुँचा दिया है जबकि स्मिथ के विचार में इसका अंत चन्द्रगुप्त द्वितीय के राज्य विस्तार के साथ ही होगया।

ऐलन ने मालव सिक्कों का विभाजन दो श्रेणियों में किया है जो निम्नलिखित हैं:—

(A) **प्रथम प्रकार :—** प्रथम प्रकार में मालव जाति का नाम विभिन्न प्रकार से अंकित है, और

(B) **दूसरे प्रकार** के सिक्कों पर राजाओं का नाम अंकित है।

सिक्कों की बनावट तथा मुद्रालेख की लिपि (लेखनकला) के आधार पर बहुत से सिक्के मालव गण के सिक्के बतलाए गये हैं।

मालवों के सभी सिक्के ताम्बे के हैं।

पहले प्रकार के गोलाकार सिक्कों के अग्रभाग पर घेरे में बोधि-वृक्ष तथा पृष्ठभाग पर कलश, सिंह नन्दि राजा का मस्तक, मोर की आकृति या नन्दिपाद, सूर्य आदि का अंकन पाया जाता है। अग्रभाग के मुद्रालेख में मालवों के विभिन्न नामों का उल्लेख है — मल, मलय अथवा मालय, मलय अथवा मालव मालवं जयः मालवा जय: अथवा जय मालवा मालव गणस्य मालवां गणस्य जय:, मालव सुजय।

x अंतिम मुद्रालेख 'मालव सुजय' केवल एक ही सिक्के पर पाया गया है। ऐलन ने इसे 'न' के स्थान पर 'स' ही पढ़ा है। उनके मतानुसार मलय अथवा मालय को हम मालव के पहले के रूप में ले सकते हैं। यूनानी शब्द "मैलोई" सम्भवतः 'मलय' शब्द के लिए

Scanned with CamScanner

प्रयोग किया गया है। अनुमानतः मालवगण राज्य का संस्थापक 'मल' नामक व्यक्ति था। मुद्रालेख मालवं जय को मालवांजय से पूर्व तक बताया ~~श~~

दूसरे प्रकार के सिक्के चौकोर हैं जिनपर मालव गण का नाम न लिखकर प्रत्येक राजा का नाम अंकित है। स्मिथ के सूचीपत्र में दो पंक्तियों का मुद्रा लेख मालवमजुप दिया हुआ है जो दाहिने से बायें की ओर लिखा हुआ है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि 'मजुम' राजा का नाम था जो मालव जाति से सम्बन्धित था। सिक्कों के मुद्रा लेख से करीब चालीस राजाओं के नाम का पता चला है। उदाहरणार्थ — यम, मलय, मगज, जगव, पद आदि। इन विचित्र नामों के साथ मयराज नाम भी मिलता है। परन्तु इसे उपाधि न मानकर राजा विशेष का नाम ही माना जा सकता है।

के० पी० जायसवाल के अनुसार राजा के नाम वाले सिक्के मालव गण राज्य के बाद के राजाओं द्वारा जारी किये गये थे, किन्तु यह मत असंगत प्रतीत होता है क्योंकि दोनों ही प्रकार के सिक्के साथ-साथ मिलते हैं।

यह प्रश्न उठता है कि दो विभिन्न प्रकार के सिक्के जारी करने का क्या कारण था। चक्रवर्ती के अनुसार संभवतः मालव जाति के लोगों ने दो प्रकार के सिक्के एक तो गण के नाम पर तथा दूसरा प्रशासकीय प्रधान के नाम पर जारी किया होगा। जो भी हो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि दो प्रकार के सिक्के एक तो गण के नाम पर तथा दूसरा प्रशासकीय प्रधान अथवा राजा जो समय-समय पर बदलता रहता था के नाम पर जारी किया गया होगा।

स्मिथ की सूची में ऐसे सिक्कों का भी वर्णन है जिनपर किसी प्रकार का मुद्रालेख नहीं है। इनपर कलश और वृक्ष की आकृति मिलती है। नन्दि का अंकन भी हुआ है।

Scanned with CamScanner

अतः बनावट के आधार पर इन सिक्कों को मालवगण के सिक्के कहे जा सकते हैं।

×